वृत्तपत्राचे नांव :– नवभारत टाईम्स्
वृत्तपत्र प्रकाशनाचे ठिकाण :– मुंबई
वृत्तपत्र पान क :– 8
दिनांक :–25/08/2010

व्यास की महिमा वर्ण व्यवस्था का नकार है

हरिओम शास्त्री ॥

लोक विश्वास के अनुसार भारत में ज्यादातर ऋषियों और मुनियों का जन्म पूर्णिमा को ही हुआ है। जैसे श्रावणी पूर्णिमा को वेदमाता गायत्री का जन्म, आश्विन पूर्णिमा को महर्षि वाल्मीकि का जन्म, कार्तिक पूर्णिमा को नानक का जन्म, माघ पूर्णिमा को संत रविदास जयंती, चैत्र पूर्णिमा को हनुमान जयंती, वैशाख पूर्णिमा को बुद्ध जयंती, ज्येष्ठ पूर्णिमा को कबीर का जन्म। इसी प्रकार आषाढ़ पूर्णिमा को वेदव्यास की जयंती मनाई जाती है।

इसी दिन महर्षि पाराशर के संकल्प और माता सत्यवती के गर्भ से वेदव्यास का जन्म हुआ था। किसी द्वीप पर पैदा होने के कारण तथा कृष्ण (काला) वर्ण होने के कारण उनका नाम द्वैपायन कृष्ण पड़ा। लेकिन कृष्ण का एक अर्थ साहित्य की भाषा में गुप्त भी होता है; जैसे जन्म के पश्चात उन्होंने किस स्थान पर तप किया, किस मंत्र का जाप किया, इस विषय में कुछ भी जानकारी नहीं है। या संभव है कि पाराशर और सत्यवती के समागम, व्यास के गर्भाधान और उनके जन्म की बात सामान्य जनों को मालूम नहीं रही हो और इस अर्थ में उन्हें गुप्त (कृष्ण) कहा गया हो।

द्वैपायन कृष्ण के जन्म का प्रसंग दूसरे कई अर्थों में भी अर्थपूर्ण है। उनकी माता सत्यवती एक दलित कन्या थी, एक मल्लाह की बेटी। और पाराशर ब्राह्मण थे। दोनों के संसर्ग से उत्पन्न संतान जैसा विद्वान हिंदू ऋषि परंपरा में दूसरा नहीं हुआ। यह वर्ण व्यवस्था का नकार था, क्योंकि वेद व्यास को महानतम प्रतिष्ठा प्राप्त हुई, और आज भी गुरु के रूप में उन्हीं की पूजा की जाती है।

व्यास का अर्थ है जो सूत्रों का आख्यान रूप में वर्णन करे अर्थात विस्तार से वर्णन करे। व्यास का एक दूसरा अर्थ है –जो केंद्र से ब्रह्मांड रूपी व्रत की परिधि के दोनों किनारों को स्पर्श करता है, अर्थात जो माया और ब्रह्म दोनों को जानता है। दोनों क्षेत्रों में अर्थात लोक और वेद, निवृत्ति और प्रवृत्ति मार्ग में, विरक्त और गृहस्थ में जिसको समान रूप से महारत प्राप्त हो उसे व्यास कहते हैं।

कहीं–कहीं शास्त्रों में व्यास जी को वादरायण के नाम से भी संबोधित किया गया है। इससे ऐसा आभास होता है कि वेदव्यास उनका वास्तविक नाम नहीं था, उन्हें यह उपाधि मिली थी।

THE SPEAKING TREE

व्यास मुनि ने 18 पुराणों की रचना की, जिसमें कुल श्लोकों की संख्या लगभग 3,82,000 है। इनमें श्रीमदभागवत पुराण सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यह ग्रंथ भक्ति और ज्ञान–विज्ञान के ताने–बाने से बुना गया है। इसमें वेदों के मंत्रों की व्याख्या प्रतीकों के माध्यम से की गई है – जैसे पुरंजन आख्यान के माध्यम से जीव और ब्रह्म का वर्णन किया गया है। चित्रकेतु और वृत्तासुर का आख्यान चित्रवृत्तियों का निरूपण करता है। पूतना का वर्णन माया की विषद व्याख्या है। इस ग्रंथ में भक्ति और ज्ञान की दोनों धाराएँ समानांतर बहती हैं।

उन्होंने वेद की संहिताओं को चार भागों में विभक्त किया था। महाभारत उनकी सामाजिक एवं राजनैतिक घटना प्रधान एक कालजयी रचना है। एक लाख श्लोकों वाला यह महाकाव्य एक इसे पंचम वेद भी कहते हैं। मानव व्यवहार का कोई ऐसा पक्ष नहीं है, जिसे इस कृति में नहीं छुआ गया हो। इसीलिए राजनीति, मनोविज्ञान और समाज के अध्ययन के लिए महाभारत आज भी उतना ही प्रासंगिक है।

वेदव्यास का साहित्य उपदेश की वस्तु नहीं है, वह तो जीवन जीने की कला है, जीवन पद्धति है, एक चिंतन धारा है। श्रीमदभागवत पुराण, महाभारत का शांतिपर्व, विष्णु सहस्त्रनाम और श्रीमदभगवद गीता इसके उदाहरण हैं। इसलिए हम व्यास जयंती को गुरुपर्व के रूप में मनाते हैं। गुरु का अर्थ है –भारी या महान। यानी सूर्य की किरणों के समान जिसके वचन हमारे अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर देते हैं।